The International Journal of Advanced Research In Multidisciplinary Sciences
(IJARMS)
Volume 3 Issue 1, Nov. 2020

'khr ;q) ds ckn dk ;qXk% 'kfä ds mHkj jgs dUn

MkW Hkjr dqekj
स्नातकोत्तर राजनीति विज्ञान विभाग,
ल०ना०मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

lkjka'k

शीत युद्ध की समाप्ति के बाद संयुक्त राज्य अमेरिका विश्व की सबसे बड़ी शक्ति बनकर उभरा। संसार में उसकी टक्कर का कोई प्रतिद्वन्द्वी शेष नहीं रहा। इसलिए विश्व राजनीति पर उसका वर्चस्व कायम हो गया। संसार की राजनीति को संचालित और नियंत्रित करने में उसकी अहम् भूमिका बन गई। 'वर्चस्व' कोई मूर्त पदार्थ नहीं जिसे देखा जा सके। इसका अनुमान तो इसके प्रभावों से आँका जा सकता है। संक्षेप में, 'वर्चस्व' की परिभाषा इस प्रकार की जा सकती है– ''दूसरों के व्यवहार को प्रभावित या नियंत्रित करने की क्षमता जिससे कि हम उनसे अपना मनचाहा काम करा सकें और उनके ऐसे किसी व्यवहार को रोक सकें जिसे हम नापसंद करें।'' दिसंबर 1991 में सोवियत संघ के पतन के साथ ही शीतयुद्ध का अंत हुआ। संयुक्त राज्य अमेरिका अब विश्व की एकमात्र महाशक्ति रह गया है। इससे 'दो–ध्रुवीय राजनीति' का अंत हो गया और विश्व 'एक–ध्रुवीय' बन गया। दूसरे शब्दों में, विश्व राजनीति पर अमेरिका का वर्चस्व कायम हो गया।

eq[; 'kCn%& 'khr;q)] vesfjdk] opZLo] 'kfä] fo'o] jktuhfr egk'kfä] {kerk

iLrkouk

शीतयुद्ध की अवधारणा का जन्म द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ति के बाद 1945 में हुआ, यह अंतरर्राष्ट्रीय सम्बन्धों की एक सच्चाई है जो अमेरिका तथा सोवियत संघ के पारस्परिक संबंधों को उजागर करती है। इसे एक नया अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक विकास का नाम भी दिया जा सकता है।

द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान अमेरिका और सोवियत संघ के मध्य मित्रता का जो नया अध्याय शुरू हुआ था, वह युद्ध के बाद समाप्त हो गया, दोनों महाशक्तियों में पारस्परिक मतभेद और वैमनस्य की भावना और अधिक गहरी होती गई और दोनों एक दूसरे को नींचा दिखाने के प्रयास करने लग गए। इस प्रयास से दोनों देशों मे कूटनीतिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्रों में सहयोग की बजाय एक संघर्षपूर्ण स्थिति का जन्म हो गया। अंतरराष्ट्रीय मंच पर दोनों शक्तियां एक दूसरे पर आरोप–प्रत्यारोप लगाने लग गई। अंतरर्राष्ट्रीय जगत में अपना–अपना वर्चस्व सिद्ध करने के प्रयास में दोनों महाशक्तियां विश्व के अधिकांश राज्यों को अपने–अपने पक्ष में लाने के लिए नए–नए तरीके तलाश करने लगी। इससे समूचे विश्व में अशांति का वातावरण बन गया और अन्त में विश्व को दो शक्तिशाली गुटों–पूंजीवादी गुट और साम्यवादी गुट में विभाजन हो गया जिसमें प्रथम का नेतृत्व अमेरिका और दूसरे का नेतृत्व सोवियत संघ करने लगा।

संयुकत राज्य अमेरिका और सोवियत संघ के सम्बन्धों में एक नवीन तत्व उभरकर सामने आया, जिसे विचारधारागत शत्रुता' कहा जाता है। वैचारिक दृष्टि से जहाँ सोवियत संघ साम्यवादी दृष्टिकोण का प्रचारक दिखायी देता था, वहाँ अमेरिका ने लोकतंत्रवादी दृष्टिकोणों के प्रसार का वीड़ा उठा लिया जिससे दोनों महाशक्तियों मे संघर्ष, अविश्वास, प्रतिस्पर्धा और भ्रान्तियाँ आम बात हो गयी।

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति व्यवस्था का दो गुटों में विभाजन, आणविक शस्त्रों के अस्तित्व और वैचारिक प्रतिस्पर्धा ने द्वि–ध्रुवीयता को जन्म दिया। यह एक ऐसी द्वि–गुटीय व्यवस्था थी जिसने विश्व की समस्त प्रभावशाली शक्तियों को अपने में समाविष्ट करके दो भीमाकार गुटों को एक दूसरे के आमने–सामने खड़ा कर दिया। इस द्वि–गुटीय व्यवस्था का संस्थापनात्मक ढाँचा इस प्रकार बन गया था जिसमें दो पृथक–पृथक गुट अवतरित होकर अस्तित्व में आ गये। केवल कूटनीतिक या भूगोल मूलक राजनीतिक कारणों से फिनलैण्ड, स्विटरजरलैण्ड जैसे राष्ट्र ही ऐसे रह गये थे जिन्होंने इस प्रकार की गुटबन्दी में हिस्सा नहीं लिया था। वास्तविकता यह थी कि विश्व के लगभग सभी देशों ने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अपने को किसी न किसी गुट के साथ संलग्न कर लिया था।

vesfjdh opLo d rhu vk;ke% lU; {kerk] vkfFkd rkdr vkj lkLdfrd opLo

किसी भी राष्ट्र की ताकत तीन गुणों से मिलकर बनती है: सैन्य बल, आर्थिक ढाँचा और सांस्कृतिक विकास

• vesfjdk dh lU; {kerk

तकनीकी विकास की वजह से सैन्यबल और युद्ध तकनीक में क्रांतिकारी बदलाव आए हैं। शस्त्रों की संहारक शक्ति बहुत बढ़ गई है। अमेरिका ने इस क्षेत्र में असाधारण क्षमता हासिल कर ली है। यह हवा की गति से भी तेज चलने वाले विमानों द्वारा अपनी एक डिविजन सेना को मात्र कुछ घंटों में यूरोप के किसी भी हिस्से में उतार सकता है। दुनिया के एक दर्जन शक्तिशाली राष्ट्र मिलकर अपनी सैन्य क्षमता को बढ़ाने के लिए जितना खर्चा कर रहे हैं, उससे कही ज्यादा अकेला अमेरिका करता है। वर्ष 2004 में अमेरिका ने अपनी सैन्य सुरक्षा पर 455.9 विलियन डॉलर खर्च किए, जबकि दुनिया के 12 ताकतवर देशों ने उस वर्ष 449.4 बिलियन डॉलर का खर्चा किया। सैन्य क्षमता के निर्माण में चार कारकों का योगदान रहता है। युद्ध तकनीक (war tehnology), सेना व शस्त्र (force and arms), आसूचना अथवा गुप्तचर विभाग (intelligence), तथा सैनिक नेतृत्व (Military leadership)।

अमेरिका में इस समय नए नाभिकीय हथियारों की जरूरत महसूस की जा रही है, चूँकि अत्याधुनिक तकनीक के कारण इनके आतंकवादियों के हाथ में पड़ जाने का खतरा नहीं होगा और इनसे भविष्य की जरूरतों को कहीं अच्छे ढंग से पूरा किया जा सकेगा।

• vesfjdk dh vkfFkd vkj <kpkxr rkdr

अधिकांश बहुराष्ट्रीय कंपनियों पर अमेरिकी नागरिकों का स्वामित्व है। वैश्विक अर्थव्यवस्था और विश्व व्यापार में अमेरिका का हिस्सा करीब 30 प्रतिशत है। इसके अतिरिक्त विश्व बैंक और विश्व व्यापार संगठन जैसे निकायों के जरिए अमेरिका राष्ट्र–राज्यों की प्रभुसत्ता से खिलवाड़ कर रहा है। समुद्री व्यापार मार्गों पर भी उसी का वर्चस्व है। ऐसा लगता है कि राष्ट्र–राज्य धीरे–धीरे अपनी प्रभुसत्ता खो रहे हैं और आर्थिक वैश्वीकरण के जरिए दुनिया के सारे शोषक, जिनका नेतृत्व अमेरिका के हाथों में है, एक हो गए हैं।

समय–समय पर अमेरिका अपने वर्चस्व का परिचय देता रहा है। अगस्त 1990 में इसकी फौजों ने अचानक कुबैत पर हमला करके उसे अपने आधिपत्य में ले लिया था। अमेरिका ने इस आक्रमण की निंदा की, परंतु सीधी कार्रवाई के बजाए संयुक्त राष्ट्र संघ को उसने अपना माध्यम बनाया। 20 नवंबर 1990 को सुरक्षा परिषद ने यह प्रस्ताव पास कर दिया कि यदि इराक 15 जनवरी 1991 तक कुबैत से नहीं हट जाता तो उसके खिलाफ सैन्य बल का प्रयोग किया जाएगा। इराक ने वैसा नहीं किया। 17 जनवरी 1991 को अमेरिका के नेतृत्व में 34 देशों की बहुराष्ट्रीय सेनाओं ने कुवैत को इराकी चंगुल से छुड़ाने के लिए इराक पर आक्रमण कर दिया। इस कार्रवाई को 'ऑपरेशन डेजर्ट स्टार्म' (Operation Desert Storm) कहा गया। सोवियत संघ, भारत तथा कई अन्य शांतिप्रिय राष्ट्रों के प्रयासों से इराक के तत्कालीन तानाशाह सद्दाम हुसैन ने अपनी गलती को महसूस करते हुए 27 फरवरी, 1991 को कुवैत से हटने की घोषणा की। इस प्रकार कुवैत को मुक्त करा लिया गया और खाड़ी युद्ध समाप्त हुआ।

इस युद्ध से विश्व में अमेरिका का वर्चस्व और दबदबा कायम हुआ। टेकनोलॉजी के क्षेत्र में अमेरिका अन्य राष्ट्रों के मुकाबले बहुत आगे निकल चुका था। सैन्य विशेषज्ञों ने इसे 'कप्यूटर युद्ध' की संज्ञा दी। अमेरिका कई वर्षो तक यह प्रचार करता रहा कि इराक ने 'सामूहिक संहार के शस्त्र' विकसित कर लिए हैं। अमेरिका और इस के सहयोगी राष्ट्रों ने 19 मार्च 2003 को इराक पर आक्रमण कर दिया। युद्ध में इन सेनाओं को पूर्ण विजय मिली। सद्दाम हुसैन पर मुदकमा चलाया गया और 30 दिसंबर 2006 को उसे फाँसी दे दी गई।

अक्टूबर 2001 में अमेरिकी सेना ने अफगानिस्तान में अल–कायदा के ठिकानों को निशाना बनाया और दिसंबर 2001 में तालिबान शासन का अंत हो गया। 22 दिसंबर को पख्तून नेता हामिद करजाई ने अंतरिम सरकार का गठन किया। बाद में यह विधिवत् अफगानिस्तान के राष्ट्रपति चुने गये। अल–कायदा के सर्वोच्च मुखिया ओसामा–बिन–लादेन ने अपने को पाकिस्तान में छिपा रखा था। 2 मई 2011 को अमेरिकी सेना की एक विशिष्ट टुकड़ी ने ऐबटाबाद में ओसामा–बिन–लादेन को मार गिराया।

vefjdh opLo ij jkd yxkus okys dkjd

विश्व राजनीति में अमेरिका का 'वर्चस्व (Hegemony) अथवा आधिपत्य (Dominance) एक बड़ी सच्चाई है। राष्ट्र राज्य धीरे–धीरे अपनी प्रभुसत्ता खो रहे हैं अर्थात् वे ऐसे फैसले नहीं ले पाते जो उनके हित में है। हाल ही में अमेरिकी खुफिया विभाग एजेंसी के पूर्व प्रमुख जॉर्ज टेनेट ने अपनी एक किताब में इस बात की पुष्टि की है कि ''अमेरिका ने 1995 में (श्री. पी.वी. नरसिम्हा राव के कार्यकाल के दौरान) भारत को एटमी टेस्ट से रोका था, लेकिन तीन साल बाद (श्री अटल बिहारी वाजपेयी के कार्यकाल के दौरान) पोखरण टेस्ट का वह कोई सुराग तक नहीं लगा पाया था। ''जॉर्ज टेनेट यह भी कहते हैं कि ''एटमी टेस्ट का पता लगाने में अमेरिका खुफिया विभाग की नाकामी मेरे कार्यकाल की गलतियों में से एक है और इसे मै अब भी नहीं भूल सका हूँ।''

यह समझना भूल होगी की अमेरिका की गतिविधियों पर रोक लगाने वाले कारक हैं ही नहीं। ऐसी कई बाते हैं जो उसकी ताकत को नियंत्रित करती है।

- अमेरिकी शासन–संरचनाः– अमेरिकी संविधान ''नियंत्रण और संतुलन के सिद्धांत पर आधारित है। तीनों अंगो–विधान मंडल, कार्यपालिका (राष्ट्रपति) और न्यायपालिका– की शक्तियों को सीमित रखनेके लिए ही इस सिद्धांत को अपनाया गया है। उदाहरण के लिए, देश के बजट को पारित करवाने में राष्ट्रपति और उसके सचिवों को काफी कठिनाई का सामना करना पड़ता है। इराक से सेना वापसी की समय–सीमा तय करने का मामला काफी गरमा गया था। संसद चाहती थी कि इसके लिए

मियाद तय की जाए, अन्यथा अमेरिकी जवानों को इराक में रखने के लिए वह खर्च की मंजूरी नहीं दी। दूसरी ओर, राष्ट्रपति इसे मानने से इंकार कर रहे थे।

- vefjdh flfoy lklkbVh& अमेरिका एक स्वतंत्र समाज है। कलाकार, लेखक, बुद्धिजीवी, समाचारपत्र और मीडिया पर राज्य का नियंत्रण नहीं है। अमेरिका में राष्ट्रपति जॉजबुश के विरोधियों ने जगह–जगह राष्ट्रीय ध्वज में लिपटी 'शवपेटी (coffin) के साथ प्रदर्शन किया। वे नहीं चाहते थे कि इराक में अमेरिकी जवानों का खून बहाया जाए।

- ukVk e 'kkfey vefjdk d ;jkih; lkFkh n'k& शीत यूद्ध के दौरान अमेरिका ने नाटो (North Altantic Treaty Organisation: NATO) और अन्य संगठनों द्वारा अपने प्रभावक्षेत्र में बढ़ोत्तरी की थी। परंतु अब शीतयुद्ध समाप्त हो चुका है। अमेरिका के मित्रराष्ट्र भी अपनी–अपनी शक्ति और प्रभाव को बढ़ाने के प्रयास करते रहे हैं। ऐसा होने से अमेरिका की ताकत पर कुछ नियंत्रण बना रहता है। उदाहरण के लिए, 2003 में इराक पर आक्रमण के समय ब्रिटेन और स्पेन तो अमेरिका के साथ थे, परंतु फ्रांस और जर्मनी ने अमेरिकी नीति का विरोध किया।

- lÙkk d odfYid dn& 1990 के दशक मे यूरोपीय संघ, चीन और जापान आदि देशों का उदय दमदार शक्तियों के रूप में हुआ।

;jkih; l?k

दूसरे महायुद्ध में यूरोप का आर्थिक ढाँचा अस्त–व्यस्त हो गया था। अमेरिका ने साम्यवाद के प्रसार को रोकने के लिए ट्रूमैन सिद्धांत का प्रतिपादन किया। साथ ही यह भी महसूस किया गया कि यूरोप का आर्थिक उद्धार किया जाए। 1947 में अमेरिका के विदेश मंत्री मार्शल ने एक 'यूरोपीय उद्धार कार्यक्रम' (Economic Recovery Programme) प्रस्तुत किया। इसका उद्देश्य यह बताया गया था कि यूरोप को भूख, गरीबी और आर्थिक अव्यवस्था से मुक्ति दिलाई जाए। पश्चिमी यूरोप के देशों को मार्शल योजना के तहत मदद देने के लिए 1948 में यूरोपीय आर्थिक सहयोग संगठन (Organisation for European Economic Cooperation: OEEC) की स्थापना की गई। इस योजना के अंतर्गत चार वर्षो के दौरान अमेरिका ने यूरोप को करीब 11 मिलियन डॉलर की मदद दी।

1949 में यूरोप के 10 देशों ने मिलकर 'यूरोपीय परिषद्' का गठन किया बाद में और भी कई देश इससे जुड़ गए। इस परिषद का मुख्य उद्देश्य यूरोपीय देशों के बीच 'आर्थिक एकीकरण' की भावना को जगाना था।

- ;jkih; vkfFkd lenk;] 1957

1957 में 'रोम की संधि' (Treaty of Rome) के द्वारा यूरोपीय आर्थिक समुदाय का गठन किया गया। शुरू में इस संधि को 6 देशों ने स्वीकार किया था, पर बाद में चार और देश आर्थिक समुदाय में शामिल हो गए। धीरे–धीरे सदस्य संख्या में बढ़ोत्तरी होती गई। 1986 तक 12 देश 'आर्थिक समुदाय' अथवा 'यूरोपीय साझा बाजार' (European Common Market) के सदस्य बन चुके थे। सदस्य–राष्ट्रों के बीच साझा व्यापार' स्थापित करने के लिए यह तय किया गया कि ये देश–धीरे–धीरे आयात और निर्यात कर व वीजा आदि के बंधन हटाने की कोशिश करेंगे। इससे इनके बीच वस्तुओं, व्यक्तियों और पूँजी का बेरोकटोक आना–जाना संभव हो सका।

- ;jkih; l?k] 1993

1957 से लेकर 1992 के बीच कई ऐसी घटनाएँ घटीं जिनके कारण यूरोपीय समुदाय का रूप बदलता गया और अंत में इसने यूरोपीय संघ का स्वरूप ग्रहण कर लिया। इस संबंध में 1992 की

मास्ट्रिस्ट संधि (Maastricht Treaty) मील का पत्थर मानी जा सकती है। यह संधि 1 नवंबर 1993 से लागू की गई और इसी दिन यूरोपीय आर्थिक समुदाय ने 'यूरोपीय संघ' का नाम अपना लिया। 1995 तक यूरोपीय संघ में 15 राज्य शामिल हो चुके थे। सोवियत संघ के विघटन के बाद इसमें कई वे देश भी शामिल हो गए जो किसी समय कम्युनिस्ट खेमे में हुआ करते थे, जैसे कि एस्तोनिया, हंगरी, लातविया, लिथुआनिया और पोलैंड। ये देश 15 दिसंबर 2004 को यूरोपीय संघ के सदस्य बने। इस प्रकार 2004 में इसकी सदस्य–संख्या 25 हो गई। 2007 में बुल्गारिया और रोमानिया भी यूरोपीय संघ में शामिल हो गए। फलस्वरूप इस संगठन के सदस्यों की संख्या बढ़कर 27 हो गई।

- ;jkih; l?k d i/kku vx (Main Bodies o the European Union)

सभी सदस्य–राष्ट्रों के लिए एक साझा संविधान हो, यह कोशिश तो विफल हो गई। इसके लिए यह आवश्यक है कि सभी सदस्य–राष्ट्र साझा संविधान की संपुष्टि करें। मई 2005 में फ्रांस के मतदाताओं ने यूरोपीय संघ के संविधान को पूरी तरह नकार दिया। यूरोपीय संघ कई प्रधान अंगों और संस्थाओं के माध्यम से काम करता है। इसके प्रधान अंग– (1) यूरोपीय आयोग,(2) यूरोपीय मंत्री परिषद (3) यूरोपीय संसद जिसके सदस्य पाँच वर्षो के लिए सीधे चुनाव द्वारा चुने जाते हैं, (4) आर्थिक और सामाजक समिति, तथा (5) न्यायिक अदालत (The Court of Justice) जो यूरोपीय संघ के कानूनों की व्याख्या करती है। यूरोपीय संघ का अपना झंडा, अपना गान और अपनी मुद्रा है जो 'यूरो' (Euro) कहलाती है।

- ;jkih; l?k d mís'; (Objectives of the European Union)

यूरोपीय संघ के प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार है–(1) आर्थिक एकीकरण अर्थात् वस्तुओं, व्यक्तियों और पूँजी का एक देश से दूसरे देश में बेरोकटोक आना–जाना, (2) सदस्य–देशों की कृषि–व्यवस्था और इनके उद्योगों का विकास, (3) साझी विदेश और सुरक्षा नीति जिससे कि इस क्षेत्र में शांत बनी रहे। यूरोप दूसरे विश्वयुद्ध की विभीषिका झेल चुका है और नहीं चाहता है कि फिर से ऐसी स्थिति पैदा हो, (4) अमीर और गरीब राष्ट्रों के बीच अंतराल को भरने के लिए विकासशील देशो को मदद पहुंचाना, तथा (5) पर्यावरण में सुधार के लिए जंगलात, नदियों व वन्यजीवों की रक्षा करना। यूरोपीय संघ ने मानवाधिकारों की रक्षा के लिए कई मौकों पर कठोर कार्रवाई की। नाइजीरिया में मानवाधिकारों के लिए संघर्ष करने वालों को मृत्युदंड दे दिया गया था। इसलिए 1995 में यूरोपीय संघ के सभी सदस्यों ने नाइजीरिया के साथ राजनयिक रिश्ते तोड़ दिए।

जिस संगठन की शुरूआत कुछ आर्थिक मुद्दों, विशेषकर कृषि और व्यापार के क्षेत्र में साझा नीतियों से हुई थी, उसका प्रभाव क्षेत्र धीरे–धीरे बहुत बढ़ गया। अब वह एक बहुआयामी संगठन बन गया है जिसका आर्थिक, राजनीतिक, सैनिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में जबरदस्त प्रभाव देखने को मिलता है।

- vkfFkd iHkko ¼**Economic Influence**½

शुरू में जिस संगठन के 6 सदस्य थे, उसकी सदस्य–संख्या बढ़ते–बढ़ते 27 तक जा पहुँची यूरोपीय संघ के 27 देशों के बीच वस्तुओं, पूँजी और टेक्नॉलॉजी का मुक्त प्रवाह जारी है। इसलिए, यूरोपीय संघ दुनिया के सबसे बड़े व्यापारिक क्षेत्र और एक आर्थिक महाशक्ति के रूप में उभरकर सामने आया है। आज इसका सकल घरेलू उत्पाद (Grfoss Domestic product) लगभग, 12,000 अरब डॉलर है, जो विश्व की महानतम् शक्ति यानी अमेरिका से भी ज्यादा है। 1 जनवरी 2002 से एकीकृत यूरोपीय मुद्रा 'यूरो' (Euro) प्रचलन में आ गई। शुरू में यूरोपीय संघ के 12 सदस्य–राष्ट्रों ने साझी मुद्रा को अपनाया, परंतु अब वह 17 देशों की साझी मुद्रा बन चुकी है। इन देशों के करोड़ों लोगों ने अपने देश की राष्ट्रीय मुद्रा को छोड़कर 'यूरो' के माध्यम से व्यापार–विनिमय शुरू कर दिया। 'यूरो' मुद्रा अमेरिकी डालर के लिए बड़ी चुनौती बनती जा रही है। यूरोपीय संघ अब आर्थिक दृष्टि से एक

वैकल्पिक सत्ताकेंद्र बनता जा रहा है। वह अमेरिका, चीन व जापान जैसी आर्थिक महाशक्तियों के साथ व्यापारिक लेन–देन में जमकर सौदेबाजी करता है। यूरोपीय संघ ने एशिया और अफ्रीका के राष्ट्रों के साथ व्यापारिक रिश्ते बनाने के लिए इन देशों में अपने प्रतिनिधि और कमिश्नर नियुक्ति किए हुए हैं। यूरोपीय आयोग का अध्यक्ष जी–8 के शीर्ष सम्मेलनों (Summits) में भाग लेता है और इन महाशक्तियों के द्वारा लिए गए फैसलों का प्रभावित करता है।

- **jktuhfrd vkj jktuf;d iHkko ¼Political and Diplomatic Influence½**

यूरोपीय समुदाय ने 1970 के दशक से ही विश्व राजनीति को प्रभावित करना शुरू कर दिया था। 1979 में सोवियत संघ ने जब अफगानिस्तान पर आक्रमण किया तो इसके द्वारा उस पर आर्थिक प्रतिबंध लगाए गए। दक्षिणी अफ्रीका की रंगभेद की नीति और फिलीस्तीनी लोगों के मानवाधिकारों के हनन का मामला उठाया गया। यूरोपीय संघ के दो देश (ब्रिटेन व फ्रांस) संयुक्त राष्ट्र संघ की सुरक्षा परिषद के स्थायी सदस्य हैं। इसलिए यूरोपीय संघ विश्व राजनीति को प्रभावित करने में एक प्रभावी भूमिका निभाता है। परंतु 1990–91 के दौरान वह यूगोस्लाविया में चल रहे गृहयुद्ध को रूकवाने में असफल रहा। यूरोपीय संघ में शामिल बड़े देश (ब्रिटेन, फ्रांस और जर्मनी) अपनी स्वतंत्र आवाज उठाने से नहीं चूकते। इसलिए कई बार राजनीतिक प्रश्नों पर इनकी सहमति नहीं बन पाती। उदाहरण के लिए, 2003 में इराक पर आक्रमण के समय ब्रिटेन और स्पेन तो अमेरिका के साथ थे, परंतु फ्रांस और जर्मनी ने अमेरिकी नीति का विरोध किया। ईरान के परमाणु कार्यक्रम के संबंध में भी यूरोपीय संघ में शामिल देशों की अलग–अलग राय है। चीन पर मानवाधिकारों के हनन के आरोप लगाए जाते रहे हैं। इस संबंध में यूरोपीय देशों ने चीन को धमकी देने के बजाए राजनयिक कौशल से काम लेना ज्यादा अच्छा समझा।

- **;jksih; l?k dh lU; {kerk ¼EU's Military Capability½**

यूरोपीय संघ के पास कोई सांझा सैन्य–तंत्र नहीं हैं अर्थात् सशस्त्र सेनाओं (defence force) पर उसका सीधे–सीधे कोई नियंत्रण नहीं। इसलिए अपने आप में उसकी सैन्य क्षमता सीमित है। 2001 में यह प्रस्ताव सामने आया कि एक 'शीघ्रगामी जबावी सेना' (rapid raction force) का गठन किया जाए जो तुरंत किसी लड़ाई में दखल दे सके, लेकिन कई सदस्य देशों (आयरलैंड और डेनमार्क) ने इस प्रस्ताव का विरोध किया। अमेरिका भी इस तरह के किसी सैन्यबल के खिलाफ था, क्योंकि उस स्थिति में 'यूरोपीय सेना' और अमेरिका द्वारा नियंत्रित नाटो सेना के आपसी रिश्तों का सवाल उलझ सकता था। फिर भी, हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि यूरोपीय संघ के सदस्य–राष्ट्रों के पास संसार की दूसरी बड़ी सेना है और ब्रिटेन व फ्रांस आणविक शक्तियाँ हैं। उनके शस्त्रागार में सैकड़ों परमाणु बम है। अंतरिक्ष युद्ध की तकनीक में भी फ्रांस व ब्रिटेन बहुत आगे बढ़ गए है।

पिछले लगभग 2 वर्षो से अरब देशों की जनता तानाशाही शासन के खिलाफ उठ खड़ी हुई है। विद्रोही चाहते हैं कि यूरोपीय ताकतें तानाशाहों की कतई मदद न करें। यूरोपीय यूनियन ने मई 2013 में सीरिया के विद्रोही तत्त्वों के पक्ष में फैसला लिया। यूरोपीय देशों ने इसे तानाशाही' बनाम 'लोकतंत्र' का मुद्दा बतलाया, चूँकि मिस्त्र, लीबिया, सीरिया, यमन व अन्य देशों में तानाशाहों का शासन मानवाधिकारों के हनन और लोगों की हत्या का जीता–जागता उदाहरण रहा है।

यूरोपीय संघ धीरे–धीरे 'बृहत्तर यूरोपीय एकीकरण' की ओर बढ़ रहा है। यह भी संभव है कि ये सभी राज्य मिलकर 'संयुक्त राज्य यूरोप' (United States oF Europe) का रूप ग्रहण कर लें। तब यह अमेरिका के वर्चस्व के लिए एक चुनौती बन सकता है। परंतु जैसा कि पहले ही बताया जा चुका है, यूरोपीय संघ के सदस्य–राष्ट्रों के बीच कई बातों को लेकर असहमति भी है। ब्रिटेन, डेन्मार्क और स्वीडन साझी मुद्रा यूरो' अपनाने के लिए तैयार नहीं हुए। फ्रांस को यूरोपीय संघ का 'साझा संविधान' स्वीकार्य नहीं हैं, हालांकि कई सदस्य राष्ट्र इसे स्वीकार कर चुके हैं। ब्रिटेन के प्रधानमंत्री डेविड कैमरन

ने जनवरी 2013 में यह बात कहकर सारे यूरोप को हैरत मे डाल दिया कि 2015 में वह यदि दोबारा चुनाव जीत जाएँ तो इस विषय पर जनता की राय लेंगें कि ब्रिटेन यूरोपीय संघ में बना रहे अथवा नहीं। इस तरह के बयानों से विश्व राजनीति में यूरोपीय संघ की भूमिका को लेकर संदेह पैदा हो सकता है।

phu dk mRFkku ¼The Rise of China½

दूसरे विश्व युद्ध के दौरान चीन में बेरोजगारी, गरीबी और आर्थिक शोषण का साम्राज्य था। जापान के विरूद्ध लंबी लड़ाई के कारण अर्थव्यवस्था चौपट हो गई थी। चीन में जो बड़े–बड़े कल कारखाने थे, उन पर भी चीनियों का नहीं, विदेशियों का कब्जा था। अगस्त 1945 में जापान ने हथियार डाल दिए। कमयुनिस्टों की लाल सेना और च्यांग काई–शेक की राष्ट्रीय सरकार के बीच गृहयुद्ध छिड़ गया। नवंबर 1949 में माओं के नेतृत्व वाली लाल सेना का चीन की मुख्यभूमि पर अधिकार हो गया। चीन का शासन च्यांग काई–शेक के हाथों से निकलकर कम्युनिस्टों के हाथ में आ गया।

fu;af=r vFkZ0;oLFkk ¼Command Economy½

माओत्से तुंग की सरकार ने सोवियत संघ (रूस) की ही भाँति नियंत्रित और योजनाबद्ध विकास पर बल दिया। जापानी कंपनियों के कब्जे में जो कारखाने, बैंक और व्यवसाय थे उन सभी को सरकार ने अपने नियंत्रण में ले लिया। इसी प्रकार रेल–यातायात, जल–यातायात तथा बड़ी–बड़ी कंपनियों को भी राज्य ने अपने अधिकार में ले लिया। बड़े–बड़े जमींदारों की भूमि किसानों के बीच बाँट दी गई।

शुरूआती वर्षो में चीनी नेताओं ने औद्योगिक और तकनीकी विकास पर ज्यादा जोर दिया। चीन के पास उन्नत तकनीक की प्राप्ति के लिए पूँजी की भारी कमी थी। इसमें कोई संदेह नहीं कि उन दिनों रूस की कम्युनिस्ट सरकार ने चीन को बहुत मदद पहुँचाई। नदियों पर बाँध लगाए गए, क्योंकि बाढ़ के कारण फसलें नष्ट हो जाती थी। चीन के संविधान द्वारा नागरिकों को कई तरह के अधिकार प्रदान किए गए, जैसे काम का अधिकार और बुढ़ापे व बीमारी की स्थिति में आर्थिक सहायता पाने का अधिकार।गाँवों और शहरों में रहने वाले गरीब लोगों को राहत पहुँचाने के लिए कल्याणकारी संस्थाएँ गठित की गई जो लोगों की इन जरूरतों को पूरा करती थी– भोजन, वस्त्र, चिकित्सा और बच्चों के लिए शिक्षा। परंतु जहाँ तक नागरिक स्वतंत्रताओं (मताधिकार व विचार और अभिव्यक्ति की आजादी) का प्रश्न है, इनका वास्तव में कोई मूल्य नहीं था। आज भी मानवाधिकारों के हनन और सरकार के विरोधियों का सफाया किए जाने का सिलसिला जारी है।

phu }kjk 1970 ds n'kd ds dN egRoiw.kZ fu.kZ;% vk/kqfudhdj.k vkSj [kqys }kj dh uhfr (Major Policy Decisions in The 1970s: An Open Door Poliy)

हालांकि अर्थव्यवस्था में विकास का दौर जारी था, पर जनसंख्या में भारी वृद्धि के कारण चीन को पिछड़ेपन से मुक्ति नहीं मिल रही थी। जनता की बढ़ती भौतिक जरूरतों और उत्पादन में अभाव के कारण चीनी नेताओं को कई महत्त्वपूर्ण निर्णय लेने पड़े। 26 अक्टूबर 1971 की चीन की कम्युनिस्ट सरकार को संयुक्त राष्ट्र संघ में शामिल किया गया और इसे सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता भी मिल गई। इसलिए अब चीन का एकाकीपन समाप्त हो गया। चीनी नेताओं ने विभिन्न देशों की यात्राएँ की। अनेक प्रमुख देशों के साथ चीन ने व्यापारिक, सांस्कृतिक और वैज्ञानिक समझौते किए। 1973 में प्रधानमंत्री चाऊ एनलाई ने आधुनिक चीन के निर्माण के लिए कम्युनिस्ट पार्टी के समक्ष यह प्रस्ताव रखा– ''हमारी पार्टी का ध्येय हैं– कृषि, उद्योग, राष्ट्रीय सुरक्षा और विज्ञान व टेक्नालॉजी को आधुनिक बनाना और चीन को एक शक्तिशाली समाजवादी देश में परिणत करना'' (Four Modernisations: Agriculture, Industry, Military and Science and Technology)।

सितंबर 1976 में माओ का निधन हो गया। चीनी नेताओं ने अनुभव किया कि यदि उन्होंने माओ द्वारा अपनाई गई अर्थव्यवस्था को नही छोड़ा तो चीन एक संपन्न देश नहीं बन सकेगा। चीन के

शक्तिशाली नेता देंग श्याओपेंग ने 1978 में सुधारवादी तथा उदारवादी नति' का सहारा लिया। इसे खुलेक्षर की नीति' बताया गया। देश श्याओपेंग ने इसे चीन की दूसरी क्रांतिकहा।

phu esa d`f"k vkSj m|ksxksa dk futhdj.k ¼**Privatisation of Agriculture and Industry in China**½

चीनी अर्थव्यवस्था को उदार बनाते समय देश श्याओपेंग ने कहा था कि ''रास्ता नहीं, लक्ष्य प्रधान होना चाहिए।'' चीन में धीरे–धीरे 'बाजारतंत्र' प्रमुख होता गया। आज की चीनी अर्थव्यवस्था नियंत्रित या कम्युनिस्ट व्यवस्था से इन बातों में भिन्न है:

d`f"k dk futhdj.k%& 'सामूहिक खेती' (Collective farming) के अंतर्गत बड़े–बड़े सामूहिक फार्म बनाए गए थे, जिन पर किसान उसी प्रकार काम करते थे जैसे फैक्टरियों में मजदूर काम करते हैं। परंतु कृषि सुधारों के अंतर्गत 'सामूहिक खेती' समाप्त कर दी गई। किसान अब अपनी भूमि के मालिक थे। कृषि के निजीकरण से कृषि–उत्पादन में आश्चर्यजनक वृद्धि हुई। इससे ग्रामीण उद्योगों को बढ़ावा मिला।

fo'ks"k vkfFkZd {ks=ksa dk fuekZ.k%& नई नीति के अंतर्गत शंघाई और कई अन्य समुद्रतटीय क्षेत्रों में विशेष आर्थिक क्षेत्र' (Speial Economic Zones) स्थापित किए गए, जहाँ विदेशी पूँजीपतियों को कल–कारखाने और उद्योग खोलने की स्वतंत्रता है। विदेशी निवेश को बढ़ावा देने के लिए उद्योगपतियों को बहुत सी रियायतें दी गई। इससे न केवल उद्योगपतियो ने ही लाभ कमाया, बल्कि सरकार की भी आमदनी बढ़ी। पश्चिमी देश उसे प्रत्यक्ष पूँजी निवेश (Foreign Direct Investment: FDI) के लिए आदर्श क्षेत्र मान रहे है। वर्ष 2012 में चीन का सकल घरेलू उत्पाद (Gross Domestic Product: GDP) 7000 अरब अमेरिकी डालर था।

विश्व व्यापार संगठन की सदस्यता–वर्षो तक सौदेबाजी के बाद वर्ष 2001 में चीन विश्व व्यापार संगठन का सदस्य बन गया। अब कई नए क्षेत्रों के लिए उसने अपनी अर्थव्यवस्था खोलने का निश्चय किया, जैसे कि बैकिंग, पर्यटन और दूरसंचार। 2004 में बीमा क्षेत्र में भी विदेशी कंपनियों ने काम–काज शुरू कर दिया। 2006 में चीन ने विदेशी कारों के आयात पर लगाए जाने वाले करों में भारी कटौती की। होटलों का स्वामित्व जो कभी सरकार के हाथों में था, अब निजी हाथों में आने लगा है।

संपत्ति संबंधी कानूनों में बदलाव– मार्च 2007 में चीन के 'संपति संबंधी कानूनों में भारी फेरबदल किया गया, जिससे कि किसानों या अन्य लोगों का अनुचित ढंग से उनकी संपत्ति सं वंचित न किया जाए। यदि कृषि–भूमि या अन्य किसी संपत्ति का जनहित में अधिग्रहण जरूरी हो तो संपत्ति के मालिक को उचित मुआवजा दिया जाएगा। नयी आर्थिक नीतियों के कारण लोगों के जीवनस्तर में सुधार आया है और उन्होने संपत्ति का भी अर्जन किया है। इसलिए वे चाहते हैं कि उन्हें उनकी संपत्ति से वंचित न किया जाए।

ubZ vkfFkZd uhfr;ksa d s ifj.kke% phu ,d oSf'od 'kfDr cudj mHkjk gS

चीन एशिया का सबसे बड़ा देश है। वह अमेरिका के बाद विश्व की सबसे बड़ी आर्थिक और सामरिक शक्ति के रूप में अपना स्थान बनाने की ओर अग्रसर है।

1. आज चीन विश्व में सर्वाधिक इस्पात तथा सीमेंट का उत्पादक देश बन चुका है। विश्व के कुल कारोबार मे चीन का हिस्सा 6 प्रतिशत से भी ज्यादा है। विश्व के दो–तिहाई कॉपियर, माइक्रोवेव ओवेन और डी वी डी प्लेयर का निर्माता चीन है। पिछले करीब 25 वर्षो के दौरान चीन की वार्षिक वृद्धि दर 9–10 प्रतिशत के करीब रही, जिससे उसका आर्थिक कायापलट हो गया। परंतु अमेरिका और यूरोप में छाई मंदी ने चीन के निर्यात–व्यापार को काफी प्रभावित किया, जिससे

2012 में वार्षिक विकास–दर घटकर 8 प्रतिशत पर आ गई। फिर भी, विश्व के अन्य देशों की तुलना में यह दर काफी प्रभावशाली है।

2. विदेशी कंपनियाँ कुशल कर्मचारियों और प्रबंधकों को भारी वेतन और भत्तों का भुगतान कर रही है। चीन में एक नए दौलतमंद वर्ग का उदय हुआ है जिससे आर्थिक असमानताएँ बढ़ रही हैं। आर्थिक विकास के साथ–साथ बेरोजगारी भी बढ़ी है। बेरोजगारों में युवा लोगों की संख्या बहुत ज्यादा है। महिलाओं के लिए भी रोजगार घटे है। संयुक्त राष्ट्र संघ की एक रिपोर्ट के अनुसार, ''चीन में आर्थिक विकास के साथ–साथ बेरोजगारी बढ़ी है। गाँवों और शहरों के बीच भारी असंतुलन देखने को मिलता है।
3. अपनी आर्थिक ताकत के बलबूते पर चीन एक बड़ी सैन्यशक्ति भी बन चुका है। उसके पास विश्व की सबसे बड़ी सेना है। पिपुल्स लिबरेशन आर्मी में लगभग 30 लाख सैनिक हैं और स्थायी सेना मे 23 लाख। 2009 में चीन का रक्षा बजट 70.3 अरब अमेरिकी डॉलर था जो 2013 में बढ़ कर 115.7 अरब अमेरिकी डालर हो गया। चीन के पास 2000 से ज्यादा लड़ाकू विमान और लगभग 300 समुद्री जहाज हैं। इसके अलावा उसके पास अंर्तमहाद्वीपीय मिसाइलें भी है जिनकी मारक क्षमता 12 हजार किलोमीटर तक है।

phu dk 'kfDr&vtZu dk [ksy ¼China's Power Game½

चीन 1950 से ही शक्ति–अर्जन के खेल में लगा है। पहले उसने अमेरिका का विरोध किया और सोवियत संघ (रूस) के खेमे में शामिल हो गया। रूस से उसने भरपूर आर्थिक और सैन्य सहायता हासिल की। बाद में 'विश्व साम्यवादी शिविर' का नेता बनने की चीन की धुन ने माओ को सोवियत संघ का शत्रु बना दिया। तब उसने अमेरिका का दामन थाम लिया।

शीत युद्ध की समाप्ति के बाद चीन की कोशिश अमेरिका, जापान, रूस और यूरोपीय संघ के साथ मजबूत आर्थिक और राजनीतिक संबंध बनाने की रही। चीन इस तथ्य को भली–भांति जानता है कि भारत भी एक विश्वशक्ति बनने की क्षमता रखता है। इसलिए वह भारत पर अंकुश लगाने के लिए पाकिस्तान को नाभिकीय हथियार और मिसाइलो की आपूर्ति करता रहा है। भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र के विद्रोहियों को चीन मे प्रशिक्षण दिया जाता है। लद्दाख और अरूणाचल की सीमाओं को लेकर चीन व्यर्थ में विवाद उत्पन्न करता रहा है। एक सरकारी रिपोर्ट के अनुसार ''भारत–चीन लाइन ऑफ एक्चुअल कंट्रोल से सटा भारत का क्षेत्र समय के साथ लगातार सिकुड़ता गया है। मई 2013 में चीन के प्रधानमंत्री ने भारत की यात्रा की। उन्होंने यह भरोसा दिलाया कि भारत और चीन अपनी सभी समस्याओं का आपसी हितों को ध्यान में रखते हुए संतोषप्रद समाधान निकालने में सक्षम है। परंतु वास्तविकता कुछ और ही है। अप्रैल 2013 में चीन के सैनिक लद्दाख क्षेत्र में भारतीय सीमा के भीतर 19 किलोमीटर तक आ पहुँचें थे। उन्होंने भारतीय क्षेत्र में 5 किलोमीटर भीतर तक पक्की सड़क भी बना ली थी। चीनी प्रधानमंत्री की भारत यात्रा से ठीक पहले चीनी सैनिक अपने सीमा क्षेत्र मे लौट गये।

साथ ही, चीन ने यह कौशल भी दिखाया है कि भारत उसे अपना अच्छा पड़ोसी समझे। मई 2013 में अपनी भारत यात्रा के दौरान चीन के प्रधामंत्री ने वादा किया कि वह ''सीमा, व्यापार और नदी जल जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर भारत की चिंताओं को दूर करने का प्रयास करेंगे।'' भारतीय उद्योगपतियों को संबोधित करते हुए उन्होंने यह कहा कि ''अच्छा पड़ोसी दूर के रिश्तेदार से बेहतर होता है।''

'kfDr&lartqyu%– चीन का एशियाई नेतृत्व का एजेंडा आज किसी से छिपा हुआ नहीं है। सच तो यह है कि अब चीन की कंपनियों ने अमेरिका में भी अपने पाँव जमाने शुरू कर दिए हैं। चीन के पाकिस्तान, नेपाल, बांग्लादेश, म्यांमार और श्रीलंका के साथ मजबूत संबंध है। इसलिए भारत को भी शक्ति–संतुलन का खेल खेलना पड़ेगा। हमें अमेरिका, रूस और जापान के साथ सामरिक सहयोग पर विचार करना होगा। हिंद महासागर में भारत अपने आपको चीनी प्रभाव क्षेत्र से घिरा हुआ पा रहा है। चीन वही करेगा जिसे वह अपने राष्ट्रीय हित के अनरूप समझेगा और ठीक यही बात भारत के साथ लागू होती है। भारत के लिए 1962 की भारत–चीन लड़ाई का सबसे बड़ा सबक यह है कि ''शांति सुरक्षित करने के लिए हमें अपनी सामरिक क्षमताओं को इतना मजबूत करना होगा कि चीन एक और हमले का दुस्साहस न कर सके।'' यह ठीक है कि 2000 से लेकर 2010 के बीच द्विपक्षीय व्यापार में 20 गुना की वृद्धि हुई है। वर्ष 2012 में तो दोनों देशों के बीच वार्षिक व्यापार 70 अरब डालर तक पहुँच गया। साथ ही, यह भी एक सच्चाई है कि व्यापार में बढ़ोतरी से दोनों देशों के बीच कटुता खत्म नहीं हुई। सीमा–विवाद का हल दर्जनों दौर की वार्ता के बावजूद नहीं हो पाया है। संतोष की बात इतनी ही है कि दोनों देशों के नेता ''शांतिपूर्ण सहअस्तित्व की बात कर रहे हैं।

fo'o jktuhfr esa :l dh Hkwfedk ¼**Russia's Role in World Politics**½

रूस विश्व मे क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा राज्य है। यह यूरोप और एशिया महाद्वीप के बीच फैला है। सोवियत संघ के विघटन के बाद रूस ने अंतर्राष्ट्रीय मामलों में पूर्व सोवियत संघ का स्थान ले लिया था। जिस तरह की आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था कम्युनिस्ट रूस मे मौजूद थी उसके स्थान पर एक नये तरह की व्यवस्था कायम करने की कोशिश की गई। अभी तक रूस की कृषि–भूमि और उद्योग धंधों पर सरकार का नियंत्रण था, जिसे 'समाजवादी व्यवस्था' कहा जाता था। परंतु अब इन्हें 'निजी नियंत्रण में लाया जा रहा हैं। जिसे 'पूँजीवादी व्यवस्था' समझा जाता है। इसी प्रकार अभी तक रूस में कम्युनिस्ट तानाशाही विद्यमान थी, पर अब वहाँ लोकतांत्रिक संस्थाएं कायम करनी थी। इस प्रकार एक तरह से रूस की कायापलट की जानी थी, जो भारी उथल–पुथल का कारण बनी। इसलिए इसे शॉक थेरेपी (Shock Therapy) कहा गया। शॉक थेरेपी' का अर्थ है– ''आघात या सद्मा पहुँचाकर रोगी का इलाज करना।'' कम्युनिस्ट शासन के खात्मे के बाद रूस में कुछ ऐसा ही हुआ।

Cykfnfej iqfru dk lÙkk esa vkuk ¼**Vladimir utin becomes the President of Rusia**½

राष्ट्रपति येल्तसिन की लोकप्रियता का ग्राफ काफी नीचे आता गया। चेचन्या निवासी अपनी आजादी की माँग कर रहे थे। 31 दिसंबर 1999 को बोरिस येल्तसिन ने अपने पद से त्यागपत्र दे दिया। प्रधानमंत्री ब्लादिमिर पुतिन रूस के कार्यवाहक राष्ट्रपति बन गए। मार्च 2000 मे संपन्न चुनावों में वह विधिवत् रूस के नए राष्ट्रपति चुने गए। श्री पुतिन रूस के खुफिया विभाग (के.जी.बी.) के प्रमुख रह चुके थे इसलिए वह जानते थे कि अपराधी तत्त्वों से किस प्रकार निबटा जाए। उन्होंन चेचन्या में मुस्लिम उग्रपंथी विद्रोह को दबाने की भी भरपूर कोशिश की। उन्होंने थोड़े ही समय में जो आर्थिक सुधार किए, उससे रूस की जनता को यह विश्वास हो चला कि वह अर्थव्यवस्था को फिर से पटरी पर ला सकते हैं। रूस की अर्थव्यवस्था को पुनर्जीवित करने मे उसके प्राकृतिक संसाधनों (लोहे, स्वर्ण, प्लेटिनम, तांबे, और गैस उद्योगों) की अहम भूमिका रही।

ब्लादिमीर पुतिन अभी भी रूस में सर्वाधिक लोकप्रिय नेता है। मार्च 2012 में वह तीसरी बार रूस के राष्ट्रपति चुने गये। लोगों को पश्चिम विरोधी, उदारवाद विरोधी तथा राष्ट्रवादी एजेंडे के आधार

पर प्रेरित करने के लिए उन्होंने एक सोची–समझी रणनीति पर कार्य किया।'' उन्होंने बड़े लोगों को 'राष्ट्रवादी' बनाने की योजना तैयार की, जिससे कि विदेशों में इन लोगों की 'अघोषित संपत्तियों के बारे में जानकारी उपलब्ध हो सके। पुतिन ने मई 2011 में 'ऑल रशिया पीपुल्स फ्रंड की स्थापना की जिसमें 1800 से अधिक सामाजिक संगठन शामिल है। यह फ्रंट कामगार लोगों को एकजुट करता है। इन लोगों की मार्फत पुतिन उन मसलों को जानना और समझना चाहते हैं जिनसे ये लोग चिंतित है।

:l }kjk 'kfDr dk vtlu ¼**Russia's Power Game**½

राष्ट्रपति पुतिन दृढ़ संकल्प वाले व्यक्ति हैं और जैसा कि पहले ही स्पष्ट किया जा चुका है, वह शक्ति अर्जन के खेल में एक चतुर खिलाड़ी है। रूस विश्व में ऊर्जा का प्रमुख आपूर्तिकर्ता रहा है। तेल की कीमतों में वृद्धि से रूस की अर्थव्यवस्था में काफी सुधार आया है। रूस ने लोकतंत्र और मुक्त अर्थव्यवस्था दोनों को ही अपना लिया है। इसलिए विश्व समुदाय में निसंदेह उसकी विश्वसनीयता व प्रतिष्ठा बढ़ी है।

1. विश्व की अर्थव्यवस्था का संचालन करने वाले संगठन जी–7 में रूस के शामिल हो जाने के बाद अब यह संगठन जी–8 के नाम से जाना जाता है। रूस को अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था का नियामक इसलिए भी कह सकते हैं क्योंकि वह अमेरिका के साथ मिलकर एक 'अंतर्राष्ट्रीय स्पेश स्टेशन तैयार कर रहा है। वह यूरोपीय सुरक्षा और सहयोग संगठन का भी सदस्य है। इसमें यूरोपीय देशों के अलावा अमेरिका और कनाडा भी शामिल है। पिछले तीन वर्षो के दौरान यूरोप के लगभग सभी देशो को मंदी की जबर्दस्त मार झेलनी पड़ी। परंतु रूस और जर्मनी काफी सीमा तक मंदी से अप्रभावित रहे। इससे रूस की आर्थिक क्षमता का पता चलता है।
2. जिस तरह रूस यूरोपीय देशों के साथ मिलकर काम कर रहा है, वैसे ही वह एशियाई और अफ्रीकी देशों के साथ भी सहयोग की राह पर है। भारत के साथ रूस का सामरिक सहयोग' देखने को मिलता है। दिसंबर 2006 में भारत और रूस के बीच संयुक्त अंतरिक्ष अभियान का रास्ता साफ हो गया। भारत रूस से स्पेस टेक्नॉलॉजी का भी निर्यात कर रहा है। शंघाई सहयोग संगठन' के द्वारा रूस मध्य एशियाई देशों और चीन के साथ सहयोग करने को तैयार है। इस प्रकार रूस जहाँ चीन के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध बनाए हुए है, वहीं वह एशिया और विश्व में चीन के प्रभाव को संतुलित भी रखना चाहता है। रूस 'ब्रिक्स आंदोलन' का भी अगुआ रहा है। ब्रिक्स में पाँच देश शामिल है, ब्राजील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका। 5वाँ ब्रिक्स सम्मेलन मार्च 2013 में डरबन में आयोजित किया गया। इस सम्मेलन मे बहुत से वैश्विक मुद्दों पर विचार किया गया, जैसे कि आतंकवाद, सुरक्षा मसलों पर अधिक आपसी सहयोग, संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद का विस्तार ताकि उभरती शक्तियों(भारत, ब्राजील आदि) को इसमें ज्यादा प्रतिनिधित्व मिल सके और विश्व बैंक व अंतर्राष्ट्रीय मुद्राकोष में विकासशील देशो का वोटिंग कोटा बढ़ाने का मसला। ब्रिक्स देश विश्व की उभरती शक्तियों का प्रतीक है। ये देश अमेरिका व यूरोप की अति विकसित ताकतों का दृढ़ता से मुकाबला कर सकते है। ब्रिक्स डेवलेपमेंट बैंक की स्थापना का मुद्दा भी तेजी से उभरकर सामने आया है। इस बैंक की आरंभिक धनराधि लगभग 50 बिलियन डॉलर होगी, जिसमें पाँचों ब्रिक्स देशों की बराबर भागीदारी रहेगी।

tkiku% mxrs lw;Z dh Hkwfe ¼**Japan: The Land of The Rusing sun**½

जापान एक छोटा सा देश है। इसमें चार मुख्य द्वीप (होन्शू, हुकैदो, क्युश और शिकोकु) तथा अन्य कई द्वीप शामिल हैं। इसका क्षेत्रफल 3,77,765 वर्ग किलोमीटर और आबादी लगभग 13 करोड़ है। दूसरे महायुद्ध में इसे भारी विनाश और पराजय का सामना करना पड़ा। परमाणु बमों की विभीषिका झेलने वाला जापान आज विश्व की एक प्रमुख आर्थिक शक्ति है। 1947 में निर्मित अपने संविधान में जापान ने

''युद्ध के परित्याग'' और 'अंतर्राष्ट्रीय शांति'' जैसे महान उद्देश्यों की घोषणा की। राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए जापान ने 1951 में अमेरिका के साथ सुरक्षा संधि की। इस संधि के द्वारा अमेरिका ने जापान की सुरक्षा की गारंटी दी है। राष्ट्रीय सुरक्षा की गारंटी मिल जाने के बाद आर्थिक और औद्योगिक विकास करना जापान का प्रमुख लक्ष्य रहा है। आज सारा संसार जापानी वस्तुओं से पटा पड़ा है, जैसे कि सोनी, पैनासोनिक, कैनन, सुजुकी, होंडा, कैमरे, घड़ियाँ, आदि। जापान के पास कच्चे प्राकृतिक संसाधन कम हैं। जापान के उद्योग धंधे आयतित कच्चे माल पर निर्भर है। जापान नाभिकीय ऊर्जा का निर्यात करता है। इसके प्रमुख उद्योग हैं– मोटरगाड़ियाँ, बारीक नाप–तोल की मशीनें, रसायन, ऊनी और कृत्रिम वस्त्र तथा पोत–निर्माण है। संयुक्त राष्ट्र संघ के बजट में जापान लगभग 20 प्रतिशत का योगदान करता है। देखा जाए तो अमेरिका के बाद इसका योगदान सबसे ज्यादा है। इसलिए संयुक्त राष्ट्र संघ की सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता का वह बड़ा प्रबल दावेदार है। 2006 में शिन्जे ऐब जापान के प्रधानमंत्री बने। उनके एजेंडे में पहली वरीयता रक्षा मंत्रालय की स्थापना थी। दिसंबर 2006 को इस मंत्रालय की स्थापना की गई। प्रधानमंत्री ने जापान की सेना को आत्मरक्षा बल का नाम दिया। जापान यदि अपने सकल घरेलू उत्पाद का मात्र एक या दो प्रतिशत भी सैन्य सज्जा पर खर्च करे तो वह विश्व की एक बड़ी सैनिक शक्ति बन सकता है। इस प्रकार जापान एक वैकल्पिक शक्तिकेंद्र के रूप में उभर रहा है।

fu"d"k%&

शीत युद्धोपरान्त अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में एक नये युग का आरंभ हुआ और अनेक नयी प्रवृत्तियों एवं विशेषताओं ने विश्व व्यवस्था में स्थान ग्रहण करना शुरू कर दिया है। नयी विश्व व्यवस्था परिवर्तन और संक्रमण के काल से गुजरते हुए अपना स्वरूप अभी निश्चित कर रही है।

अन्तर्राष्ट्रीय शक्ति व्यवस्था बहु–ध्रुवीयता की ओर अपने चरण बढ़ा रही है। अमेरिका की विशाल शक्ति देखने में एक ध्रुवीयता की स्थिति पैदा की है, लेकिन सत्ता के विरोधी केन्द्र भी उभर रहे है। जर्मनी, चीन व जापान अपना केन्द्र बनाने में लगे हैं। क्षेत्रीय संगठन (जैसे यूरोपीय संघ व आसियान) अपनी भूमिका अदा कर रहे है।

lanHkZ xzUFk lwph

1. अग्रवाल, आर.सी.: भारत की विदेश नीति, किताब घर हाईकोर्ट रोड ग्वालियर, 1962
2. कुमार, महेन्द्रः अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के सैद्धांतिक पक्ष, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी अस्पताल मार्ग, आगरा, 1967
3. कौशिक, पी.डी.: अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, कल्याणी पब्लिशर्स नई दिल्ली–2000
4. कुलश्रेष्ठ, के.के. : अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध (1945–1985) नई दिल्ली, 1986
5. कोली, सी. एम.: अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध (1945–1999 तक) साहित्यगार प्रकाशन जयपुर 2001
6. खन्ना, वह. ए. एवं अरोड़ा लिपाक्षी, भारत की विदेश नीति, विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा. लि. नई दिल्ली– 1997
7. खन्ना, वी. एन.: अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा. लि. मस्जिद रोड जंगपुरा, नई दिल्ली 2007
8. खण्डेला, मानचन्द्रः अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद आविष्कार पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर, जयपुर (राजस्थान) 2003
9. गर्ग, वी.डी.: भारत की विदेश नीति, पंकज प्रकाशन मेरठ, 1977
10. गुप्ता, एम. जी.: अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, वाई0 के0 के प्रकाशन आगरा, 1982
11. चन्द्रा, पी. : इण्टरनेशनल पॉलिटिक्स, न्यू दिल्ली, 1979
12. जोहरी, जे. सी.: अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध तथा राजनीति, स्टर्लिंग पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड ए–59, ओखला इन्डस्ट्रीयल एरिया फेस–2, नई दिल्ली, 2011